SUMMARY OF THE REPORT

संजीव के उपन्यासों में पारिस्थितिक संकट

प्रकृति से हमारा सीधा सम्बन्ध है। वह एक तरह से हमारे लिए एक ऐसी व्यवस्था है, जिसमें हम जीते हैं, रहते हैं और काम करते हैं। सभ्यता एवं उद्योगों की वृद्धि के साथ प्रकृति में भी बदलाव आया है। किन्तु दुर्भाग्य की बात यह है कि उसका एहसास हमें तब होता है जब कोई बडी दुर्घटना हो चुकती है। पर्यावरण-विशेषज्ञों का मत है कि लाखों वर्षों के प्राकृतिक परिवर्तनों के बाद मनुष्य आज इस स्थिति तक पहूँचा है कि वह सृष्टि का सबसे महत्वपूर्ण प्राणी हो गया है। परन्तु वह भी प्रकृति का एक अंग मात्र है, जिसके परिणामस्वरूप आज विश्व पर्यावरण-प्रदूषण का शिकार हो गया है। प्रकृति की साझेदारी में वायु-मण्डल एवं जीव-मण्डल का एक निश्चित अनुपात रहता है। यह अनुपात जब भी बिगडता है, प्रकृति का सन्तुलन भी बिगड़ जाता है और तभी चराचर जगत को प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पडता है।

पर्यावरण अनेक प्राकृतिक तत्वों का समूह है। मनुष्य हो या जीव-जन्तु सभी पर्यावरण की ही उपज है। वास्तव में प्रकृति के दो अति जटिल तत्व हैं - जीव और पर्यावरण। ये अन्योन्याश्रित हैं, परस्पर सम्बद्ध हैं। परिस्थिति विज्ञान या पारिस्थितिकी जीव और पर्यावरण के पारस्परिक सम्बन्ध का अध्ययन मात्र है। वास्तव में एक दर्शन है जिसमें जीव जगत की व्याख्या प्राकृतिक प्रक्रियाओं के सम्बन्ध में की जाती है। प्रमुख बात तो यह है कि पारिस्थितिकी, जीव और उनके पर्यावरण के बीच परस्पर सम्बद्ध है। प्रकृति में प्रत्येक प्राणी एक-दूसरे पर आश्रित है। एक जीव दूसरे का शिकार कर अपनी उदरपूर्ति करता है, प्रकृति का यही नियम

है। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रत्येक जीव किसी न किसी रूप से एक दूसरे पर निर्भर करता है चाहे वह उसका शिकार करता है या शोषण। यदि ऐसा न हो तो प्रकृति का सन्तुलन नष्ट हो जाएगा।

आज मानवीय क्रिया-कलापों के द्वारा पर्यावरण के सन्तुलन में विशेष अंतर हो जाता है। वनों का विनाश करना सबसे अधिक हानिकारक है। वनों के कट जाने से पर्यावरण के सन्तुलन पर सबसे अधिक प्रभाव पडा है। मानवीय क्रियाओं से बाढ़ आना और भूमि का मरुस्थलीय रूप लेना भी मुख्य कारणों में से एक है। आधुनिक युग में तकनीकी विकास के माध्यम से कुछ पारिस्थितिकीय समस्याओं का जन्म हुआ है। ऐसे कुछ कारण इस प्रकार है -

1 हरीकरण, जनस्ख्या वृद्धि, मृत्यु दर में कमी आदि का पर्यावरण पर प्रभाव पड चुका है।
2 तकनीकी शिक्षा के प्रसार से अनेक पर्यावरणीय प्रदूषणों का जन्म।
3 तीव्र गति से वनोन्मूलन
4 परिवहन द्वारा वायु-प्रदूषण का विस्तार आदि।

इन कारणों के अतिरिक्त और भी मानव द्वारा किये गये ऐसे कारण है जिनसे पारिस्थितिक-तन्त्र का सन्तुलन पूर्णत: बिगड गया है। प्रदूषण के प्रति भय की भावना पैदा करना ज़रूरी है। प्रचार माध्यमों से जनता को पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाना ज़रूरी है। सबसे बडी बात तो यह है कि हमें यह समझना है कि पृथ्वी के जो संसाधन हैं, सीमित है और उनके उपभोक्ता बहुत हैं।

सारांश यह है कि मानव द्वारा किये गये कार्यों से पारिस्थितिक सन्तुलन में जो अंतर आता है जिससे पृथ्वी में अनेक दोष उत्पन्न हो रहे हैं। यदि

समय रहते इनका समाधान न किया गया तो मानव का इस पृथ्वी पर रहना कठिन अवश्य हो जाएगा। इस पारिस्थितिक संकट को दूर करने के लिए सारा विश्व प्रयत्नशील है। विश्व भर के साहित्यकारों ने भी इस भयंकर समस्या को अपने साहित्य का विषय बनाया है। समकालीन हिन्दी साहित्यकारों ने भी इस पारिस्थितिक संकट को चुना है और अपने साहित्य द्वारा इस भयंकर समस्या से मुक्ति चाहा।

हिन्दी के मशहूर कथाकार संजीव ने इस भीषण समस्या को अपने उपन्यासों के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से एक नई ज़मीन टूटती है। 'किसनगढ़ के अहेरी', 'सर्कस', 'सावधान! नीचे आग है', 'धार', 'पाँव तले की दूब', 'जंगल जहाँ शुरू होता है', 'सूत्रधार' जैसे उपन्यासों में उन्होंने नवीनता ही ढूँढी है। उनके उपन्यासों का कथ्य पिछड़े अंचलों की त्रासदी, जनजातीय अभिशप्त जीवन, औद्योगीकरण के तहत होनेवाला विस्थापन, दलित चेतना, लोकजीवन और लोक संस्कृति से जुड़े विभिन्न सन्दर्भों को उजागर करता है।

'धार' उपन्यास में कोयला खदान और कारखानों के परिणाम स्वरूप यहाँ का प्राकृतिक परिवेश प्रदूषित मिलता है। धूप और धुएँ में जलती बस्तियाँ, अधनंगे बच्चे, दमघोटू वातावरण, खाँसते लोग, मरियल कुत्ते की तरह पेड गंदगी का साम्राज्य यहाँ फैला है। वास्तव में मनुष्य द्वारा हो रहा भौतिक विकास मनुष्य के अस्तित्व पर ही उठ रहा है। ऊपर से सुन्दर दिखनेवाला विकास अन्दर से मनुष्य की जमात नष्ट करने के लिए ज़िम्मेदार साबित हो रहा है।

'पाँव तले की दूब' में झारखण्ड स्थिति मेझियाँ गाँव केन्द्रबिन्दु है। उपन्यासकार इसके माध्यम से यह बताना चाहता है कि औद्योगीकरण किस प्रकार

गाँव तथा आदिवासियों को विस्थापित कर रहा है। औद्योगीकरण की नीति और राजनीतिक कुटिलता के चलते आदिवासी बुरी तरह छटपटाते हैं।

संजीव का उपन्यास 'सावधान ! नीचे आग है' चन्दनपुर के कोयला खदान पर आधारित है। चन्दनपुर गाँव के लोग इस खदान की सज़ा भोग रहे हैं। संजीव ने ज़्यादातर उपन्यासों में किसी न किसी प्रकार के पर्यावरण प्रदूषण की ओर संकेत किया है। 'जंगल जहाँ शुरू होता है' नामक उपन्यास में जंगल की एक विशेष जनजाति की सुरक्षा की ओर इशारा किया गया था।

साहित्य के माध्यम से पर्यावरण शिक्षा जन -साधारण को पर्यावरण की समस्याओं और उसके संरक्षण और सुधार के लिए अपेक्षित मानवीय व्यवहार का ज्ञान करा सकती है। पर्यावरणीय शिक्षा मनुष्य की वृत्ति को बदलने में पूर्णत: सहायक हुई, यह कहना उचित नहीं है। फिर भी बच्चों और स्त्रियों पर पर्यावरण शिक्षा का पर्याप्त प्रभाव पडता है। भावात्मक स्तर पर कोई भी शिक्षा कारगर हो सकती है। समाज के प्रति प्रतिबद्ध लेखक जनसाधारण को पर्यावरण के संरक्षण के प्रति सचेत करना अपना दायित्व समझते हैं। इसके लिए वे पर्यावरणीय समस्याओं को सशक्त रचनात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करने के साथ ही पर्यावरण संकट से मुक्ति पाने के लिए अपनी ओर से् कुछ सुझाव भी प्रस्तुत करते हैं। संजीव का 'धार' इस दृष्टि से विचारणीय है।

हमारे इस देश में अपने घर का कूडा-कचरा दूसरे के घर के आगे फेंकनोवालों की कमी नहीं है। कुछ लोग तो सड़कों पर फेंकते हैं। पर्यावरण की शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण अंग यह होना चाहिए कि व्यक्ति प्रकृति के प्रति निकटता महसूस करें। एक अच्छे नागरिक को इस कर्त्तव्य बोध से जुडना चाहिए कि पर्यावरण की रक्षा और सुधार से ही हम जीवन की गुणवत्ता बढ़ा सकते हैं।

'सावधान ! नीचे आग है', 'धार', 'पाँव तले की दूब' और 'आकाशचम्पा' में विकास परियोजनाओं के परिणामस्वरूप उत्पन्न पर्यावरणीय समस्याओं का जीवन्त चित्र उपस्थित कर संजीव यह बताना चाहते हैं कि हमें प्रगति का सहारा तो अवश्य चाहिए। लेकिन इसके लिए प्राकृतिक संपदाओं का बड़े पैमाने पर उपभोग एक भारी चूक होगा। इसी के साथ वे मानव समाज की बेहतरी के लिए, आगामी पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य के लिए प्राकृतिक संसाधनों के उपभोग में सावधानी बरतने की चेतावनी भी देते हैं। कुलमिलाकर अपने उपन्यासों में पर्यावरणीय समस्याओं को जीवन्त अभिव्यक्ति प्रदान कर संजीव प्रकृति और पर्यावरण की अहमियत से पाठकों को आगाह कराने का सार्थक प्रयास करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन से विदित हो गया है कि संजीव के उपन्यास के समग्र अध्ययन की भी अनंत सम्भावनाएँ हैं।